लिए कोई स्थान नहीं है। इसे केवल पाशविक कहा जा सकता है। और ये बार्बरिक घटनाएं हमें पिछले दिनों में देखनी पड़ी हैं जो बहुत अफसोस और दुख की बात है चिन्ता की बात है कि इसको कैसे खत्म किया जाए या बंद किया जाए। मैं कोई लंबी बात इसमें नहीं करूंगा, सिवाय इसके कि अगर हमें जरा सा भी आभास होता कि वहां की सरकार ने जान-बूझकर यह करवाया है जैसा लगातार कहा जाता है, तो शायद वाजपेयी जी और यह सरकार निश्चित रूप से उसके खिलाफ काम करते। मैं मानता हूं कि कहीं-कहीं पर कुछ कमी रह गई होगी, कहीं-कहीं पर एडमिनिस्ट्रेशन की हो, पुलिस की हो, किसी की कमी जरूर रही है, लेकिन यह कहना कि जानबूझकर, सरकार द्वारा किया गया नरसंहार, क्षमा कीजिए, कम से कम मैं जितनी जानकारी कर सकता हूं, व्यक्तिगत रूप से और क्या जानकारी से इतना बड़ा अंतर हो गया है गुजरात के बाहर की प्रैस और गुजरात की प्रैस के बीच जिसका उल्लेख अभी हरिन पाठक जी के भाषण में हुआ, वह अंतर इस कारण है कि बहुत बार हमारे मन में कुछ इमेज बन जाती है। पोलिटिकल होने के कारण स्वाभाविक रूप से हम चाहते हैं कि उसके कारण कुछ पोलिटिकल परिणाम निकलें ताकि जो भयंकर घटनायें वहां हुई हैं, मुझे अच्छी तरह से याद है जब पिछले साल गुजरात में भूकम्प आया था, उस भूकम्प पर हुई सारी बहस के बाद आपरेटिव पार्ट यही था कि श्री केशू भाई पटेल जी इस्तीफा दें। आज मुझे ताज्जूब नहीं होता कि श्री नरेन्द्र मोदी इस्तीफा दें-यह आपरेटिव पार्ट बन जाता है। हमारी सरकार की मान्यता है कि श्री नरेन्द्र मोदी के इस्तीफा देने से समस्या का हल नहीं होता। हम समस्या का हल निकालना चाहते हैं और इस समस्या का हल सिक्योरिटी के लैवल पर, कठोर कदम उठाकर, हर अपराधी के खिलाफ, चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान हो, कार्यवाही हो, इसकी व्यवस्था हम करना चाहते हैं। रिहैबिलिटेशन रिलीफ के स्तर पर ठीक प्रकार की व्यवस्था हो जाये, उसमें किसी प्रकार की कमी न रहे और रिलीफ कैम्प में लोगों को ज्यादा दिन न रहना पड़े, इस बात की व्यवस्था करने की दिशा में जो भी आवश्यक कदम उठाने हैं, वे हम उठायेंगे। उसका कुछ दिग्दर्शन माननीय प्रधान मंत्री जी अपने वक्तव्य में करेंगे।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं सबका आभार मानता हूं कि आपने इस बहस में भाग लेकर एक प्रकार से रात्रि को साढ़े तीन बजे तक इस विषय के महत्व को देखते हुए देश के सामने इसका जिक्र किया है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: उपाध्यक्ष महोदय, मैं फिर यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि मैं चर्चा का उत्तर देने के लिए खड़ा नहीं हुआ हूं। चर्चा का उत्तर श्री मुलायम सिंह जी को देना हैं। प्रस्ताव उनका था इसलिए सदन उन्हें सुनने के लिए तैयार रहे। मैं सिर्फ सदन को सूचित कर रहा हूं। जहां तक मेरा सवाल है, रिहैबिलिटेशन के बारे में पैकेज की घोषणा करने के साथ-साथ मुझे दो बातें और कहनी हैं। एक यह कि इस बहस में मेरे ऊपर आरोप लगाया गया और बार-बार यह आरोप दोहराया गया कि मैं अपने वक्तव्य को बदलता रहता हूं। मैं आज कुछ कहता हूं, कल कुछ कहता था और परसों कुछ और कहूंगा। मैं इस आरोप का खंडन करना चाहता हूं। मेरा सार्वजनिक जीवन सबके सामने है। मेरे विचारों से मतभेद हो सकता है लेकिन मैं अपने वक्तव्य को क्यूं बदलूंगा? मैंने किस स्वार्थ को सिद्ध करना है? कौन सा राजनीतिक लक्ष्य पूरा करना है? कहा जाता है कि आपने गुजरात में कुछ कहा है और गोवा में कुछ कहा है-यह बात सच नहीं है। मैंने जो गुजरात में कहा, वही मैंने गोवा में कहा है।....*(व्यवधान)* मेरे सारे भाषण टेप किये हुए हैं। पूरी तरह से छपे हुए हैं। उनमें हेरफेर की गुजांइश नहीं है। मैंने जो कहा, वह मैं उद्धृत करना चाहता हूं। मेरे ऊपर आरोप है कि मैंने इस्लाम का विरोध किया। यह भी मेरे ऊपर आरोप है कि मैंने मुसलमानों का विरोध किया। ऐसा लगता है कि मेरी जिंदगी की सारी कमाई यहीं खत्म होने जा रही है। मेरा कोई विरोध इस तरह का आरोप मेरे ऊपर लगाये, इसे मै अपने ऊपर लांछन समझता हूं। जीवन में मैंने कभी भी भेदभाव नहीं किया, न धर्म के आधार पर न जन्म के आधार पर और न जाति के आधार, लेकिन आज यह राजनीति का चक्र ऐसा है जो मेरी सारी प्रतिष्ठा को पीस रहा है। मुझे दुख होता है। मैंने जो कुछ कहा....*(व्यवधान)* इस्लाम के बारे में मैंने जो कुछ कहा, वह इस प्रकार है। इस्लाम के दो रूप हैं - एक इस्लाम ऐसा है जो सबको सहन करता है, जो सच्चाई के रास्ते पर चलने की सीख देता है, जो संवेदना और दया सिखाता है। लेकिन आजकल जिस इस्लाम को लेकर मिलिटैंसी अपनाई जा रही है, उसमें सहिष्णुता के लिए कोई स्थान नहीं है। वह जेहाद के नारे पर चलता है और सारी दुनिया को अपने सांचे में ढालने का सपना देखता है।

मैं अपनी यात्रा की बात कर रहा हूं। मैं सिंगापुर और कम्बोडिया गया था। आपको सुन कर ताज्जुब होगा और मुझे भी वहां ताज्जूब हुआ कि सिंगापुर में अल कायदा के कुछ आतंकवादी पकड़े गए। सिंगापुर के शासक कभी सोच भी नहीं सकते थे कि उनके देश में भी अल कायदा सक्रिय होगी, उनके देश में भी अल कायदा षडयंत्र रचेगी। वहां 15-16 लोग पकड़े गए और गुप्त जांच चल रही है। इस सच्चाई का पता लगाया जाए। यही इंडोनेशिया में हो रहा है और यही मलेशिया में हो रहा है। जहां-जहां ऐसे मुसलमान हैं, वे मिल कर रहना नहीं चाहते, औरों के साथ घुलना-मिलना नहीं चाहते और शान्तिपूर्ण ढंग से अपना प्रचार करने के बजाए, आतंक से, भय से, डरा-धमका कर अपने मत का प्रचार करना चाहते हैं। दुनिया इस खतरे के प्रति जागरूक हो गई है। इसमें क्या आपत्ति की बात है।

मगर इसके साथ-साथ एक आरोप और जुड़ हुआ है कि मैं इस्लामिक फंडामैंटलिज्म की आलोचना करता हूं मगर हिन्दू फंडामैंटलिज्म की आलोचना नहीं करता। यह भी गलत है। अभी थोड़े दिन पहले श्री मल्कानी द्वारा लिखित 'इंडिया फर्स्ट' किताब का मुझे विमोचन करना पड़ा और उस वक्त मैंने भाषण दिया है। उस किताब में हिन्दुत्व का गुणगान है, मगर मैंने कहा कि हिन्दुत्व उदार होना चाहिए, उदात्त होना चाहिए। अगर हम हिन्दुत्व की बात करें तो मुझे विवेकानन्द का हिन्दुत्व पसन्द है लेकिन संकुचित और संकीर्ण हिन्दुत्व पसन्द नहीं है। मेरे कुछ साथियों ने इसको बुरा माना। उनकी राय अलग हो सकती है। लेकिन मैं आलोचना करने से चूका नहीं और जब कभी कसौटी का वक्त आया है, मैंने ऐसा कदम उठाया है जो इस बात को सिद्ध करे कि देश को उदार रास्ते पर जाना है, सामंजस्य के रास्ते पर जाना है, समन्वय के रास्ते पर जाना है। यही भारतीय संस्कृति का संदेश है। लेकिन आज मेरी छवि को बिगाड़ने के लिए ये आरोप लगाए जा रहे हैं जैसे कि एक दिन में एक भाषण ने मुझे समाप्त कर दिया। एक आरोप मानों मेरे ऐसा जहर बन गया जिसका कोई अंत नहीं दिखाई देता।

उपाध्यक्ष महोदय, मैंने एक विषय का उल्लेख किया है। दूसरा है, आज के भाषण में....*(व्यवधान)*

एक माननीय सदस्यः कल के भाषण में।

श्री अटल बिहारी वाजपेयीः मैं कह रहा हूं आज के भाषण में, आप कह रहे हैं कल के भाषण में। विरोधी दल की नेत्री ने अपने भाषण में मेरा उल्लेख किया था। उन्होंने मुझसे अपील की है कि मैं दलबंदी से ऊपर उठूं और देश के व्यापक हितों का विचार करूं। मैं उनके विचारों की कद्र करता हूं। दलबंदी से हम सबको ऊपर उठना है। मैंने गुजरात में जो कुछ देखा है, सुना है और अनुभव किया है, उससे मुझे भविष्य के बारे में बड़ी आशंका पैदा होती है। अगर हम मिल कर, जो नया जहर पैदा हो रहा है, उन्माद, उसे मैं पागलपन का नाम दूंगा, मैं नहीं जानता एक-दो कथाएं प्रचलित हो रही हैं, वे कहां तक सच हैं। लेकिन जिस प्रकार की ज्यादतियों के समाचार मिल रहे हैं, नारी के साथ अपमान की घटनाओं की चर्चा हो रही है, उससे कभी-कभी ऐसा लगता है कि क्या समाज का स्वरूप बदल गया है। दंगा एक चीज है। कटुता और कट्टरता भी मैं समझ सकता हूं, मगर मनुष्य का इतना गिरना कि बलात्कार हो और बलात्कार करने वाले को लज्जा न हो, शर्म से उसका सिर झुक न जाए और समाज उसके लिए कठोर शब्दों का प्रयोग न करे या अपनी भावनाओं को प्रकट न करे, तो यह समझना चाहिए कि एक ऐसा रोग लग गया है, इसको अगर हमने इलाज नहीं किया तो वह हमारी सारी सभ्यता और संस्कृति को खा जाएगा। यह एक नया संकट है।

मुझे मालूम है मराठी के एक पत्र ने अपना सम्पादकीय लिखा। उन्होंने जो लिखा, कोई गलत न समझे इस समय ऐसी बात कहना, मैं नहीं जानता कहां तक ठीक साबित होगी। उसने लिखा कि मुसलमान भाइयो, आप क्यों शिकायत करते हैं, क्या आपके साथ ज्यादियां हो रही हैं, यह तरूण भारत का एडिटोरियल है, आप क्यों शिकायत करते हैं, यह तो हिन्दू समाज ने आपका ही जो पाठ पढ़ा है, अब उसको व्यवहार में ला रहे हैं जो आचरण हो रहे हैं, वे निंदनीय हैं, गर्हणीय हैं। एक ठसक थी हमारी कि हम कुछ काम नहीं करेंगे, जिनकी मर्यादा चली आ रही है, पुराने जमाने से, लेकिन मैं सुनकर धक रह गया कि अच्छे-अच्छे घर के लोगों ने दुकानें लूटीं। कोई सामान की उनको कमी नहीं थी। यह लूट की प्रवृति कैसे पैदा हो रही है, मैंने यहां तक सुना है कि सामान लूट लिया और घर जाकर देखा कि यह अच्छा नहीं है, फिर वापस उसी कार से ले गए, जिससे लेकर आए थे। जो पसंद नहीं था, उसको छोड़ दिया और दूसरा सामान ले आए। ये घटनाएं अगर सच हैं तो सचमुच में दुख पहुंचाने वाली हैं।

महिलाओं के साथ जो बर्ताव हुआ है, महिलाओं का एक प्रतिनिधिमंडल आया था। उसने महिलाओं से बात की। उन्होंने एक शर्त लगाई कि हमारी आपकी बात तब होगी, जब यहां कोई अखबार वाला नहीं होगा, लाउडस्पीकर नहीं होगा, टी.वी. नहीं होगा और कोई पुरुष भी नहीं होगा। महिलाओं का प्रतिनिधिमंडल आया है तो महिलाओं से बात करेगा। महिलाओं से बातें हुई। जो बातें करके गई, उनसे मैंने पूछा कि जो कथाएं प्रचलित हो रही हैं, जो किस्से बताए जा रहे हैं, उनमें कहां तक सच्चाई है, तो मुझे बताया गया कि उसमें सच्चाई जरूर है, लेकिन थोडी है। उसको बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जा रहा है। यह दुर्भाग्य की बात है। वह एक अलग पहलू है। इस सारे गुजरात के कांड में मीडिया की जो भूमिका रही है, उस पर गम्भीरता से विचार करने की जरूरत है। आप कहेंगे कि यहां मैं मीडिया की आलोचना कर रहा हूं। मीडिया को बलि का बकरा बना रहा हूं, लेकिन हत्या का दृश्य बार-बार दिखाना, आग में जली हुई लोगों की लाशों का प्रदर्शन करना, केवल समाचार के रूप में नहीं, समाचार तो एक बार दिया जा सकता है, लेकिन उसको लगातार दिखाना,

श्री बसुदेव आचार्यः रोज घटना घट रही है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयीः रोजाना घटनाएं घट रही हैं, तो उनको रोकना चाहिए। यह हम सबका काम है कि उनको रोकें।

श्री तरित बरण तोपदारः क्या मीडिया रोकेगा?

श्री अटल बिहारी वाजपेयीः मीडिया भी इसमें सहायक हो सकता है। मीडिया को भी अपनी भूमिका निभानी है। मीडिया को

नहीं लेगी। कहीं न कहीं यह भाव मन में था और वह गलत था। उसका कितना गहरा असर हुआ है, यह मुझे बाद में पता लगा। पहली बार जब मैं उसके बारे में बोला तो मैंने उन दोनों को एक साथ रखा था गोधरा के बदले के रूप में जो कुछ हुआ है, उसका औचित्य सिद्ध नहीं किया जा सकता, दोनों निन्दनीय हैं। आखिर आज सोनिया जी को कहना पडा कि हमने निन्दा की थी, यह कहने की जरूरत क्यों पड़ी?...*(व्यवधान)* मैं फिर कहता हूं, उस बात को छोड़ दीजिए वह पुरानी बात थी, आगे हम क्या करना चाहते हैं।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री प्रवीण राष्ट्रपाल: हमें इनका प्रस्ताव स्वीकार कर लेना चाहिए...*(व्यवधान)*

श्री सोमनाथ चटर्जी: महोदय, एक स्थानापन्न प्रस्ताव आने दें। एक स्थानापन्न प्रस्ताव का प्रारूप तैयार होने दें। सभा एक आवाज में एक विचार व्यक्त करे। हमें ऐसा करना चाहिए...*(व्यवधान)*

श्री प्रियरंजन दासमुंशी: आप गोधरा तथा गुजरात की हिंसा दोनो की निंदा कीजिए।...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: हम दोनो कंडेम करते हैं।

[अनुवाद]

श्री प्रियरंजन दासमुंशी: आप इसे सभा के सामने लाइये...*(व्यवधान)*

श्रीमती सोनिया गांधी (अमेठी): अब हम एक सर्वसम्मत संकल्प लाते हैं। हम अब इसे लाएं...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: मैं इसका स्वागत करता हूं लेकिन लोग बेघरबार हो गए हैं, उनके लिए मैं पैकेज की घोषणा कर दूं।...*(व्यवधान)* तब तक आप चर्चा कर लीजिए कि किस तरह का सदन का अभिमत हो...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय, आप मदद करें। हम नहीं चाहते कि सदन इस सवाल पर बंटे।...*(व्यवधान)* हमारे वोट कम हैं, हम इसलिए यह बात नहीं कह रहे हैं। हम बहुमत में हैं, लेकिन यह अल्पमत और बहुमत का सवाल नहीं है।...*(व्यवधान)* आज देश का सम्मान दाव पर लगा है, देश का अस्तित्व और यह सदन आगे बढ़ कर कदम बढ़ाए तो वातावरण बदल सकता है। आपकी अनुमति से मैं इसे पढ़ता हूं-

[अनुवाद]

जिन्होंने अपने घर, सामान और जीवन यापन के साधन गंवाए उनका पुनर्वास तथा सभी दंगा प्रभावी क्षेत्रों में आर्थिक सामान्य गतिविधियों को तत्काल प्रारम्भ करना अब प्राथमिक राष्ट्रीय कार्य बन गया है। उन पर तत्परता समझदारी तथा सहानुभूति से ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। भयंकर भूकम्प के पश्चात गुजरात में समाज के सभी वर्गों द्वारा दर्शाया गया स्वैच्छिक समर्थन तथा भाईचारा एक बार फिर प्रदीप्त करना पड़ेगा। पुनर्वास पैकेज व्यापक होना चाहिए और उसमें समाज के सभी वर्गों को शामिल किया जाना चाहिए।

मैं गुजरात सरकार को राहत और पुनर्वास कार्यों में कार्यान्वयन हेतु तत्काल 150 करोड़ रुपए के पैकेज की घोषणा करता हूं...*(व्यवधान)* इस सहायता पैकेज में प्रारम्भिक रूप से ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों दोनों में क्षतिग्रस्त घरों तथा दुकानों का पुनर्निर्माण और मरम्मत स्वरोजगार में लगे उन सभी वर्गों, जिन्होंने अपनी आय, सम्पत्ति गवां दी, को सहायता को प्रावधान व्यापारिक वाणिज्यिक तथा औद्योगिक गतिविधियों को पुन: शुरू करने के लिए वित्तीय सहायता शामिल होगी।

इसमें प्रभावित क्षेत्रों में शैक्षिक, चिकित्सा और अन्य संस्थाओं का पुनरुद्धार और विधवाओं और बच्चों को लाभ पहुंचाने के लिए विशेष कार्यक्रम भी शामिल हैं।

हम पैकेज को बैंको और वित्तीय संस्थाओं से उदार तथा रियायती शर्तों पर ऋण और सहायता के रूप में पूरी मदद दी जाएगी जैसा कि 26 जनवरी, 2001 को आए भूकम्प के पश्चात दी गई थी।

घरों तक दुकानों के निर्माण और पुनर्निर्माण हेतु हुडको तथा राष्ट्रीय आवास बैंक की सक्रिय भागीदारी से सहयोग प्राप्त किया जाएगा। इसी प्रकार, वित्तीय संस्थाओं को औद्योगिक और आर्थिक गतिविधियों को उत्प्रेरित करने के लिए कहा जाएगा। इस प्रयास में राष्ट्रीय अल्पसंख्यक वित्त और विकास निगम को एक सहयोगी भूमिका अदा करने के लिए कहा जायेगा।

रोजगार तथा कल्याण योजनाओं तथा प्रधान मंत्री रोजगार योजना और सम्पूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना को जहां कहीं भी आवश्यक होगा उनके अंतर्गत प्रावधानों में उचित रूप से वृद्धि करके बढ़ावा दिया जायेगा। यह सुनिश्चित किया जाएगा कि

साम्प्रदायिक दंगों से प्रभावित कोई भी व्यक्ति इस राहत और पुनर्वास से वंचित नहीं रहना चाहिए।

यह पुनर्वास पैकेज मेरे द्वारा घोषित उस व्यापक राहत पैकेज के अलावा है जिसे मैं 4 अप्रैल, 2002 के अहमदाबाद यात्रा के दौरान किया था। मार्च से ही किसी न किसी रूप में राहत चल रही है। तत्काल पुनर्वास की आवश्यकता को देखते हुए सरकार यह सुनिश्चित करेगी कि इस पैकेज का कार्यान्वयन चार माह के अन्दर किया जाए। इस हेतु मंत्रिमंडल सचिवालय को साप्ताहिक आधार पर कार्यान्वयन की निगरानी रखने के लिए कहा गया है।

श्री कमलनाथ: क्या वह सदन को सूचित करेंगे?...*(व्यवधान)*

श्री के. येरननायडू (श्रीकाकुलम): महोदय, माननीय प्रधान मंत्री ने अपना जवाब दे दिया है। हमने चार मांगें की थी। माननीय प्रधान मंत्री द्वारा कुछ मांगों को पूरा किया गया है। सबसे महत्वपूर्ण मांग यह है। हमने गुजरात के लोगों के बीच विश्वास एवं सौहार्द पैदा करने हेतु नेतृत्व में परिवर्तन करने और गुजरात में हालात सामान्य करने और साम्प्रदायिक सद्भाव पैदा करने हेतु नेतृत्व में परिवर्तन करने की मांग की है। इसे पूरा नहीं किया गया है। इसलिए, इसके विरोध में हम सभा का बहिष्कार करने का निर्णय लेते हैं।

रात्रि 3.58 बजे

(इस समय, श्री के. येरननायडू और कुछ अन्य माननीय सदस्य सभा-भवन से बाहर चले गए)

श्री प्रियरंजन दासमुंशी: महोदय, बाहर से समर्थन देने वाली पार्टी ने सभा का बहिष्कार किया है। अब कैसे सर्वसम्मति होगी?...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री मुलायम सिंह यादव: उपाध्यक्ष महोदय, 16 घंटे की लम्बी बहस हो गयी है। हम आपके समक्ष सबसे पहले इस सदन के सभी माननीय नेताओं का और माननीय सदस्यों का आभार व्यक्त करते हैं।

रात्रि 4.00 बजे

इस महत्वपूर्ण एवं गम्भीर बहस में सभी ने महत्वपूर्ण सुझाव दिये हैं और चिन्ता भी व्यक्त की गई है। विपक्ष एवं सत्तापक्ष के साथियों ने खुलकर अपने सुझाव दिये हैं। मैं विश्वास करता था कि माननीय प्रधानमंत्री जी और गृह मंत्री जी कुछ ज्यादा कहते गुजरात के दंगाग्रस्त क्षेत्रों का दौरा करने राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, अल्पसंख्यक आयोग या विभिन्न गैर-सामाजिक संगठन के सदस्य गये। इसके अलावा सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल और हमारे मोर्चे का प्रतिनिधिमंडल भी गया। सभी ने यह अहसास किया इसमें सरकार की खुल्लम-खुला कमजोरी थी। उस सरकार के बारे में कुछ न कहना और केवल तारीफ कर देना और यह कहना कि प्रशासन की गलती हो सकती है, मुख्यमंत्री की गलती नहीं, इससे हम सहमत नहीं हैं। मुख्यमंत्री के बयान ने आग में घी डालने का काम किया है। इतना भंयकर दंगा हुआ जिसके बारे में गृह मंत्री ने सच्चाई से अपना अफसोस जाहिर किया है। प्रधानमंत्री जी न कुछ बातें सही मानी लेकिन आप लोगों को जो शक और शुबहा हो रहा है कि बलात्कार की घटनायें सच हैं या नहीं? जैसा बताया गया कि कुछ ऐसी घटनायें हुई हैं लेकिन सच और गम्भीर बात यह है कि यदि उन महिलाओं की चोटें देखें तो वे कहती हैं कि उनके लिये क्या बचा है। हमने कल भी बताया था कि महिलायें अपनी चोटें दिखाने के लिये तैयार हैं और हमने देखी हैं। हमारी मानवता को रौंदा गया है। हम सब को शर्म आनी चाहिये। इससे पूरे देश को शर्मिन्दगी उठानी पड़ रही है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हमारी छवि खराब हो गई है जिसे गृहमंत्री जी ने स्वीकार किया है। हम इस सारी बहस में नहीं जाना चाहते लेकिन मैं इतना कहना चाहता हूं कि यह शंका दूर कीजिये कि हम लोग सदन नहीं चलाने देते हैं। हम तो सदन की कार्यवाही चलाना चाहते हैं। हमारी कोई बड़ी मांग नहीं थी। रक्षा मंत्री जी ने कहा कि मोरारजी देसाई ने अनशन किया तो उस समय गुजरात के मुख्यमंत्री को हटाया गया। क्या हम लोगों द्वारा अनशन किये जाने के बाद ही वहां के मुख्यमंत्री को हटाया जायेगा? यह कोई अच्छी बात नहीं है। हमें परम्पराओं का पालन करना चाहिये। जब मोरारजी भाई ने अनशन किया, उस समय हम यहां नहीं थे लेकिन 1975 की पूरी राजनीति के बारे में सब जानते थे कि क्या हुआ। माननीय रक्षा मंत्री जी को उस मर्यादा का पालन करना चाहिये था। इनकी संस्कृति का रास्ता कैसे बदल गया और क्या हो गया।

उपाध्यक्ष महोदय, केरल में जब पहली सरकार बनी थी, केवल 6-7 मजदूरों की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। डा. राम मनोहर लोहिया ने फरुर्खाबाद जेल से टेलीग्राम देकर कहा था कि निर्दोष और निहत्थे लोगों पर गोली चलाने के वह पक्षधर नहीं हैं। सरकार को वहां इस्तीफा दे देना चाहिये। वहीं से समाजवादी नेताओं में मतभेद शुरू हुआ। राष्ट्रीय सम्मेलन में इस पर गम्भीर चर्चा हुई कि कुछ ही वोटों से डा. राम मनोहर लोहिया का प्रस्ताव गिरा था। रक्षा मंत्री जी उसी संस्कृति से हैं और उन्हें उस संस्कृति को निभाना चाहिये था। डा. लोहिया की इन बातों से प्रभावित होकर हम फरुर्खाबाद में विद्यार्थी जीवन में जेल गये थे। इतनी गंभीर चर्चा की परम्परा और संस्कृति से निकलकर आये हैं कि आपको एक मिनट में इस्तीफा दे देना चाहिये था, समर्थन भले ही करते रहते लेकिन रक्षा मंत्री बनकर नही रहते। अगर उनमें जरा